ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

शुम्बहा देवी या देव

श्री एल एम वहल,
पूर्व अधिक्षण पुरातत्ववेत्ता
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग

कानपुर देहात के अन्तर्गत लगभग 27 किमी0 की दूरी पर पश्चिम की ओर स्थित है, ग्राम मैथा और इससे लगभग 2 किमी0 दक्षिण पश्चिम में एक ऊंचे टीले पर स्थित है प्रसिद्ध एवं भव्य शुम्बहा या सम्बहा देवी का मन्दिर। मैंने इस धार्मिक स्थल की यात्रा युवा एवं उत्साहो मित्र श्री अनूप शुक्ला जी के सहयोग से सम्पन्न की और दर्शन लाभ उठाया। मन्दिर एक प्राचीन टीले पर स्थित है। ऐसा प्रतीत होता है कि मध्यकाल में यहां एक मन्दिर अवश्य रहा होगा जो कालान्तर में नष्ट हो गया और उसी मन्दिर के ध्वंसावशेष पर वर्तमान इमारत का निर्माण सम्पन्न हुआ। अतः यहां का सांस्कृतिक व पुरातात्विक वैभव यहीं निहित है, आवश्यकता है केवल इससे अन्वेषण की।

एक ऊंचे चबूतरे पर स्थित चूने व ईंटों द्वारा निर्मित इसकी चार मोटी–मोटी दिवारों के ऊपर एक भव्य बुत नुमा (Bulbous) गुम्बज स्थित है, जिसका निर्माण सुनियोजित ढग से किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि गुम्बद एक अष्टकोणीय ढोल (Drum) से प्रादुर्भूत हो रहा है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में निर्मित यह मन्दिर तत्कालीन स्थापत्य कला की अनूठी देन है। यह लगभग 25 फीट ऊंचा व देखने में आकर्षक तथा पूर्वाभिमुख है।

इस मन्दिर के एक मात्र कब्र (गर्भगृह) में केवल एक प्रस्तर पट्ट (Stala) स्थापित है, जो स्थानीय लोगों द्वारा शुम्बहा देवी के नाम से पूजित है। इस क्षेत्र में इस देवी की अत्यन्त मान्यता है। किन्तु इसके निरीक्षण से यह तथ्य प्रकाश में आया कि यह एक पुरूष प्रतिमा है। इसमें कोई भो नारी गुण उपलब्ध नहीं है। स्त्रीयोयित शारीरिक गठन तथा स्त्री अवयवों का न होना इसकी पुष्टि करता है। यह देव प्रतिमा खण्डित अवस्था में है, ग्रीवा से ऊपर का भाग (सिर) व दोनों भुजाएं ध्वस्त हैं। केवल बांयी भुजा का कुछ अंश शेष है जिस पर अलंकृत भुज बन्ध शोभायमान है। इस सिर विहीन देव प्रतिमा के खण्डित गले में कंठ आभूषण, कटि क्षेत्र में अलंकृत कटिबन्ध–मेखला यज्ञोपवीत इत्यादि सुशोभित है। वर्तमान में खण्डित सिर के स्थान पर एक अन्य पाषाण सिर स्थापित कर दिया गया है, जो मूल प्रतिमा से बिलकुल भिन्न है। यह देव प्रतिमा बलुई पत्थर (Sand Stone) एकांकी–अभंगी, मुद्रा में निर्मित है। प्रस्तर पट्ट के परिकर व रधिकाओं में कुछ लघु मूर्तियों की संरचना तो है, किन्तु वे अधिक ध्वस्त होने के कारण तथा सिन्दूर की मोटी परत से ढकने से अस्पष्ट और पहचान के अयोग्य है। प्रतिमा का पादपीठ एवं अन्य शिलोल्कीर्ण भाग प्राकृतिक क्षरण से नष्ट हो चुका है तथा प्रभा मण्डल का भी अभाव है। परन्तु मुख्य देव प्रतिमा के पार्श्व में केवल सर्प कुण्डलाकृति शेष है। सम्भवतः वह इस प्रतिमा को पहचानने समझने हेतु कुछ सूत्र प्रस्तुत करें। किन्तु इतना तो निश्चय रूप से कहा जा सकता है कि यह हिन्दू धर्माश्रित देव प्रतिमा है जिसका सम्बन्ध वैष्णव धर्म से है।

हिन्दू देवताओं में विष्णु एक प्रमुख देवता माने जाते हैं। इनका वर्णन वैदिक काल से उपलब्ध है। अग्निपुराण में विष्णु के दस अवतारों का वर्णन है। उनमें से एक अवतार बलराम का भी है। बलराम विष्णु के मानवी अवतार हैं। इनकी कथा भागवत, विष्णु, वैवर्त, हरिवंश पुराणों में पर्याप्त रूप से देखने को मिलती है। बलराम का दूसरा नाम संकर्षण भी है। शास्त्रकारों ने उनकी प्रतिमा निर्माण व लक्षणों का आधार भी दे रखा है। अतः उन लक्षणों के आधार पर ही उनकी प्रतिमा का निरूपण होता है। बेखानसागम, अग्निपुराण व

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

बृहत्संहिता के निर्देशानुसार बलराम द्वि या चतुर्भुजी बताए गये हैं। इनके हाथों में हल–मूसल इत्यादि आयुध हैं। वे जटा मुकुट यज्ञोपवीत, वनमाला आभूषणों से युक्त होने चाहिए तथा सिर के पीछे कुण्डलिता शेषफण सुशोभित होने चाहिए। यहां हम देखते हैं कि विवेच्य प्रतिमा में केवल सर्प कुण्डलाकृति ही शेष रह गयी है। अतः इस आधार पर इसको बलराम प्रतिमां कहना या मानना उपयुक्त होगा। लगभग 2.5 फिट ऊंची यह देव प्रतिमा मूर्ति विज्ञान व शिल्पकला शैलो के अनुसार बारहवीं शताब्दी की संरचना प्रतीत होती है। निश्चय उस युग मं इस पुरास्थल पर एक वैष्णव मन्दिर, रहा होगा जिसके अलंकृत अस्तर द्वारशाखा, रन्ड–मुन्ड कलाकृतियां और उस काल के परिचायक ध्वंसावशेष आज भी यहां यत्र–तत्र दिखाई पड़ते हैं जो इसके पुरातन भव्य कोर्ति की गाथा प्रस्तुत कर रहे हैं। हमारी आध्यात्मिक साधना, पवित्रता व शान्ति का यह एक पुनीत स्थल है। अतएव उसी रूप में इसका संरक्षण व विकास की आवश्यकता है।

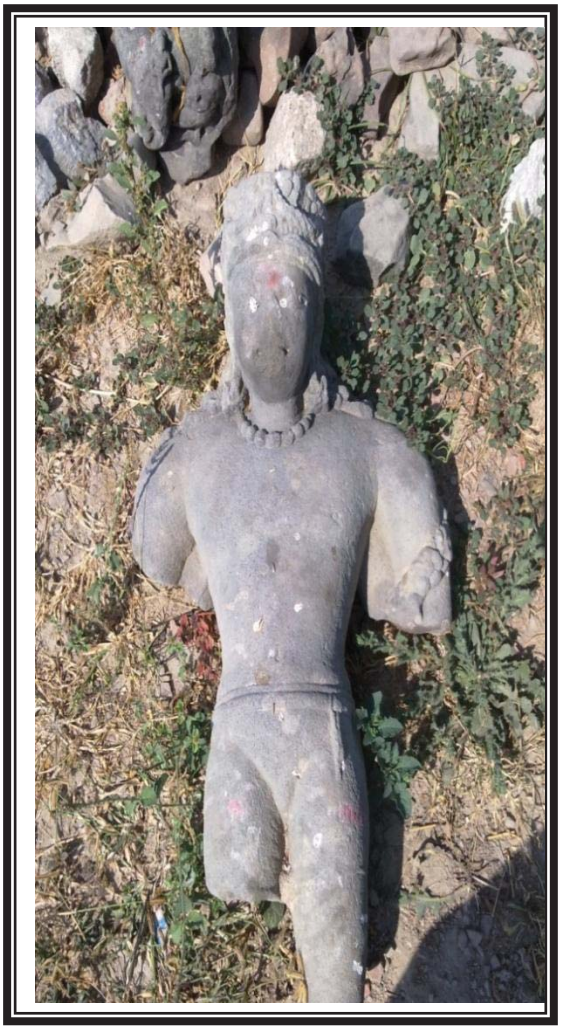

यह प्राचीन प्रतिमा ग्राम बीहूपुर, घाटमपुर, कानपुर नगर में एक टीले पर स्थित है,। इसके बारे में किंवदन्ती है कि जब वहां सूखा पड़ता है तो सभी ग्रामवासी इसकी पूजा करने के बाद बगल के तालाब में डाल देते हैं उसी रात में वर्शा हो जाती है।